पाठ-6 भारतीय संगीत की एक झलक

डॉ. भूपेन हाजरिका

दोपहर का समय था। स्नेहा अपने कमरे में सहेली नेहा के साथ गीत सुन रही थी। इसी बीच संगीत की एक परिचित धुन सुनने को आई :

“दिल हुम-हुम करे घबराए,
घन घम-घम करे गरजाए
एक बूंद कभी पानी की
मोरी अँखियों से बरसाए।”

इस गीत की धुन सुनकर दोनों बड़ी खुश हुईं। नेहा तपाक से बोल उठी- “स्नेहा, क्या तुम जानती हो यह गाना किसका है ?” स्नेहा ने कहा - “हाँ-हाँ, क्यों नहीं ? यह भारतीय संगीतकार, गीतकार, गायक तथा दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता हमारे असम के भूपेन हाजरिका जी का एक अन्यतम गीत है। उन्होंने अपने गीतों के सुरों से असमीया में ही नहीं बल्कि बांग्ला और हिंदी भाषा में भी अपनी अलग पहचान बनाई है। वे भारतीय संगीत की दुनिया में मशहूर कलाकार लता मंगेशकर, किशोर कुमार, मुहम्मद रफी आदि की तरह एक आदरणीय कलाकार हैं।” नेहा फिर बोल उठी - “तब तो तुम भारतीय संगीत के बारे में भी जरूर जानती होगी!” स्नेहा ने कहा - “हाँ, थोड़ा-बहुत जानती हूँ। मैंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी ली है। क्या तुम भारतीय संगीत के बारे में नहीं जानती हो ?” नेहा ने उत्तर दिया - “नहीं, मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। लेकिन संगीत मुझे बहुत पसंद है। बताओ न स्नेहा, इसकी शुरुआत कहाँ से और कैसे हुई ?”

शहनाई वादक उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ

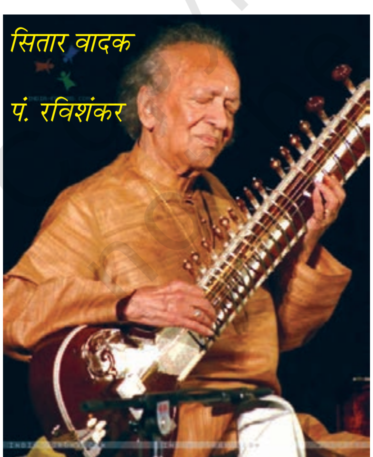

सितार वादक पं. रविशंकर

“तो सुनो- कलाओं में संगीत एक अन्यतम प्राचीन कला है। इस कला का विवेचन आचार्य भरतमुनि के ‘नाट्यशास्त्र’ में मिलता

है। इस कला का आधार ध्वनि है। आचार्य शारंगदेव के अनुसार 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते।' अर्थात गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों कलाओं को एक साथ संगीत कहा जाता है। गीत शब्द के साथ 'सम' उपसर्ग मिलकर 'संगीत' शब्द बना है।''

''भारतीय परंपरा के अनुसार स्वर–संगीत ही पहले स्थान में आता है। बाद में वाद्य और नृत्य का स्थान है। संगीत में वाद्यों का स्थान अति महत्वपूर्ण है। क्योंकि वाद्य ही गीत के सुर, राग और लय को मधुर बनाते हैं। वाद्यों के बिना संगीत और नृत्य अधूरे हैं। साधारणतः संगीत में *तबला, हारमोनियम, सितार, सारंगी, मृदंग, खोल, पखवाज, वायोलिन, तानपुरा, वीणा* और *बंसी* आदि वाद्यों का व्यवहार होता है। वैदिक युग में ही इसका श्रीगणेश हुआ था। लेकिन तेरहवीं–चौदहवीं सदियों में इसका परिवर्तन होने लगा। मूलतः उत्तर भारत में मुगल शासन के दौरान भारतीय संगीत कला में बहुत परिवर्तन हुए। क्योंकि मुगल बादशाह संगीत एवं राग को ज्यादा महत्व देते थे। उदाहरण स्वरूप अकबर के समय संगीतकार तानसेन ने संगीत की धारा को अलग बनाया। बाद में भारतीय संगीत पर ईरान, फारस, अरब आदि देशों के संगीत का भी प्रभाव पड़ा। इस तरह भारतीय संगीत का विकास हुआ।''

तबला

तानपुरा

नेहा ने स्नेहा की बात को आगे बढ़ाने के लिए फिर पूछा, ''भारतीय संगीत की कितनी धाराएँ हैं और ये क्या–क्या हैं ? इनका विकास कैसे हुआ ?''

''हाँ, यह तुमने बहुत अच्छा सवाल पूछा है। भारतीय संगीत की दो प्रचलित धाराएँ हैं। पहला है– हिंदुस्तानी अथवा उत्तर भारतीय संगीत की धारा। दूसरा है– कर्नाटकी अथवा दक्षिण भारतीय संगीत की धारा। असम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात आदि स्थानों में हिंदुस्तानी संगीत की धारा प्रचलित है। दूसरी ओर तमिलनाडु, आंध्र, कर्नाटक, केरल आदि स्थानों में प्रचलित संगीत की धारा को कर्नाटकी अथवा दक्षिण भारतीय संगीत कहा जाता है। इस संगीत के स्वरों का उच्चारण हिंदुस्तानी संगीत की तरह नहीं होता। इसके ज्यादातर गीतों की भाषाएँ तमिल, तेलुगु और मलयालम आदि हैं। दूसरी ओर, हिंदुस्तानी संगीत के गीतों की ज्यादातर भाषाएँ ब्रज, हिंदी और उर्दू आदि हैं। इस संगीत की धारा को पं. विष्णु नारायण भातखंडे, पं. श्रीकृष्ण नारायण रतनझंकार, पं. भीमसेन जोशी, उस्ताद आमिर खान, पं. यशराज, तबला वादक पं. सामता प्रसाद, सरोद वादक अली अकबर खाँ, पं. गणेश प्रसाद मिश्र, शहनाई वादक उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ, बाँसुरी वादक

हारमनियम

हरिप्रसाद चौरसिया और सितार वादक पं. रविशंकर आदि महान लोगों ने आगे बढ़ाया।'' नेहा बीच में बोल उठी, ''स्नेहा, क्या हमारे असम का ऐसा कोई कलाकार नहीं है, जिसका हिंदुस्तानी संगीत में योगदान हो?'' स्नेहा ने उत्तर दिया– ''हाँ–हाँ, क्यों नहीं? हमारे असम के चारु बरदलै, परबीन सुलताना, पवन बरदलै, दिलीप रंजन बरठाकुर, हीरेन शर्मा, बीरेन्द्र कुमार फुकन, दामोदर बोरा, शरत चेतिया आदि महान कलाकारों के योगदान से असम में भी इस धारा के संगीत का व्यापक प्रचार व प्रसार हुआ। हमारे असम में संगीतज्ञ पं. विष्णु नारायण भातखंडे के नाम पर कई विद्यालय और महाविद्यालय भी खोले गए हैं, जिनके द्वारा शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। साथ ही पं. विष्णुदिगंबर पलुस्कर जी के गंधर्व महाविद्यालय मंडल के द्वारा भी यह शिक्षा दी जाती है। हमारे यहाँ कर्नाटकी संगीत धारा का उतना प्रचलन नहीं है। इसका प्रवाह दक्षिण भारत में ज्यादातर दिखाई देता है। भारतीय संगीतज्ञ एवं दक्षिण भारतीय संगीत धारा की प्रधान नेत्री भारत रत्न एम. एस. शुभलक्ष्मी जी ने इस धारा को आगे बढ़ाया है।''

परबीन सुलताना

नेहा ने फिर पूछा– ''स्नेहा, क्या तुम शास्त्रीय संगीत के अलावा शास्त्रीय नृत्य के बारे में भी जानती हो?'' स्नेहा ने कहा– ''नहीं, इसके बारे में मुझे अधिक जानकारी नहीं है। लेकिन मेरे भैया रोहन कथक का एक अच्छा नर्तक है। चलो, हम उनसे नृत्य के बारे में भी जान लें।'' दोनों रोहन के पास चली गईं। वे दोनों से कहने लगे– ''कथक के अलावा भरत नाट्यम्, मणिपुरी, कुचिपुरी, ओडिसी, मोहिनी आत्तम, कथकली और सत्रीया आदि भी शास्त्रीय नृत्य में आ जाते हैं। जिस तरह कथक को शंभू महाराज और बिरजू महाराज जैसे लोगों ने इतना लोकप्रिय बनाया, उसी तरह भरत नाट्यम को भी लोकप्रिय बनाने में रुक्मिणी देवी अरुण्डेल का बहुत बड़ा हाथ है। 'ओडिसी' उड़ीसा का प्राचीन नृत्य ही नहीं बल्कि भारतीय शास्त्रीय नृत्य का भी एक अन्यतम अंग है। इसका नाम रोशन करने में केलुचरण महापात्र की बहुत बड़ी देन है। ओडिसी की भाँति केरल की 'कथकली' भी आज एक अन्यतम शास्त्रीय नृत्य है। गुरु शंकरण नंबुद्रीपादजी ने इसको लोकप्रिय बनाया है। ठीक उसी तरह मणिपुरी, मोहिनी आत्तम और कुचिपुरी नृत्य का भी शास्त्रीय नृत्य में एक

भरत नाट्यम

मणिपुरी नृत्य

कथाकली नृत्य

सत्रीया नृत्य

अलग स्थान है। जिस तरह मोहिनी आत्तम को शांता राव और भारती शिवाजी जैसे महान कलाकारों ने लोकप्रिय बनाया है, उसी तरह कुचिपुरी को राजा और राधा रेड्डी तथा मणिपुरी को लोकप्रिय बनाने में विपिन सिंह आदि कलाकारों का बड़ा योगदान है।'' स्नेहा और नेहा रोहन भैया को 'धन्यवाद' कहकर कमरे में आ गईं। नेहा कुछ और पूछना ही चाहती थी कि एकाएक स्नेहा बोल पड़ी, ''हमारे असम में महापुरुष शंकरदेव के द्वारा स्थापित सत्रों में प्रचलित सत्रीया नृत्य को भी सन् 2000 ई° में शास्त्रीय नृत्य के रूप में स्वीकृति मिली है। महापुरुष शंकरदेव के सत्रीया नृत्य की लोकप्रियता और महत्व आज हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बढ़ रहा है। नृत्यकार मणिराम बायन मुक्तियार, रखेश्वर शइकीया 'बरबायन', और नृत्याचार्य यतीन गोस्वामी आदि महान कलाकारों के कारण ही हमारे सत्रीया नृत्य को आज पूरे विश्व में इतना बड़ा सम्मान मिला है।'' नेहा ने उसकी बात को आगे बढ़ाकर पूछा– ''स्नेहा, हमारे असम में शास्त्रीय नृत्य और शास्त्रीय संगीत के अलावा और क्या-क्या नृत्य और गीत प्रचलित हैं ?'' उसके प्रश्न का उत्तर देकर स्नेहा ने कहा– ''हमारे असम में बिहुगीत, ज्योति संगीत, विष्णुराभा गीत, बरगीत, लोकगीत और रवीन्द्र संगीत आदि प्रचलित हैं। साथ ही बिहु नृत्य, बागरूम्बा और झूमुर आदि लोकनृत्य भी प्रचलित हैं।''

बागरूम्बा

झूमुर

इतने में स्नेहा की माँ दोनों के लिए चाय लेकर आईं। चाय पीते-पीते नेहा ने स्नेहा की माँ से कहा – ''चाची, आज मैं स्नेहा से भारतीय संगीत के बारे में बहुत-सी बातें जान गई हूँ। शास्त्रीय संगीत भारतीय संगीत का एक अविच्छिन्न अंग है। अत: मैं भी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा जरूर लूँगी।'' माँ दोनों को शाबाशी देकर चली गईं। दोनों खुशी से उछल पड़ीं और नेहा अपने घर चली गई।

आओ, जानें :

बिहु हमारे असम का जातीय त्योहार है। बिहु गीत और बिहु नृत्य दोनों लोक संगीत के अंतर्गत आते हैं। बाँसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया की भाँति हमारे असम से ढोल वादक मघाइ ओझा, सोमनाथ बोरा 'ओझा' आदि कलाकारों ने असम की संस्कृति के प्रधान अंग बिहु को विश्व में स्थापित किया है।

अभ्यास-माला

पाठ से :

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए उत्तरों में से एक सही है। सही उत्तर का चयन करो :

(क) 'दिल हुम हुम करे घबराए .... बरसाए।' इस गीत के रचयिता हैं–

(अ) लता मंगेशकर (आ) भूपेन हाजरिका (इ) ए.आर. रहमान (ई) जावेद अख्तर

(ख) अकबर के राजदरबार के संगीतज्ञ थे–

(अ) बीरबल (आ) हुमायूँ (इ) तानसेन (ई) अबुल फजल

(ग) भारतीय संगीत की शुरुआत कब हुई थी ?

(अ) वैदिक युग से (आ) नव प्रस्तर युग से

(इ) भक्ति युग से (ई) आधुनिक युग से।

(घ) पं. रविशंकर किस वाद्य के श्रेष्ठ कलाकार हैं ?

(अ) तबला (आ) शहनाई (इ) सितार (ई) सरोद

(ङ) भारतीय संगीत की कितनी प्रचलित धाराएँ हैं ?

(अ) एक (आ) दो (इ) तीन (ई) चार

2. उत्तर लिखो :

(क) आचार्य शारंगदेव के अनुसार संगीत की परिभाषा क्या है ?

(ख) भारतीय शास्त्रीय संगीत की कितनी धाराएँ हैं ? ये क्या-क्या हैं ?

(ग) हिंदुस्तानी संगीत की धारा का प्रचलन कहाँ-कहाँ है ?

(घ) दक्षिण भारतीय संगीत क्या है ? इस धारा का संगीत कहाँ-कहाँ प्रचलित है ?

(ङ) नेहा ने शास्त्रीय संगीत सीखने का निश्चय क्यों किया ?

(च) सत्रीया नृत्य के प्रवर्तक कौन हैं ? इसे लोकप्रिय बनाने में किन कलाकारों का योगदान है ?

पाठ के आस-पास

1. भारतीय संगीत में व्यवहृत होने वाले मुख्य स्वर हैं– षड़ज, ऋषभ, गंधार, पंचम, धैवत और निषाद। संक्षेप में इन स्वरों को सा, रे, गा, मा, पा, धा और नि कहा जाता है। आओ, हम इन स्वरों को कक्षा में सुर के साथ गाएँ।

Copyright- SCERT, Assam not to be republished

2. **भारतीय शास्त्रीय संगीत को विभिन्न दिशाओं में अलग-अलग कलाकारों ने लोकप्रिय बनाया है। उनमें से कुछ कलाकारों के नाम सोचो, ढूँढ़ो और लिखो :**

तुमलोगों की सहायता के लिए निम्नलिखित विषयों के एक-एक कलाकार के नाम दिए गए हैं :

(क) तबला वादक : पं. सामता प्रसाद, ...,

........................, ...,

........................, ... ।

(ख) सरोद वादक : उस्ताद अली अकबर खाँ, ...,

........................, ...,

........................, ... ।

(ग) शहनाई वादक : उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ, ...,

........................, ...,

........................, ... ।

(घ) सितार वादक : पं. रवि शंकर, ...,

........................, ...,

........................, ... ।

(ङ) बाँसुरी वादक : पं. हरिप्रसाद चौरसिया, ...,

........................, ...,

........................, ... ।

3. शास्त्रीय संगीत, लघु शास्त्रीय संगीत और आधुनिक संगीत की तुलना करो और इनका अन्तर बताओ।

4. भारतीय शास्त्रीय नृत्य को कुछ कलाकारों ने लोकप्रिय बनाया है। उन कलाकारों के नाम ढूँढ़ो और लिखो :

(क) सत्रीया नृत्य : ....

(ख) भरत नाट्यम : ....

(ग) कथक नृत्य : ....

Copyright- SCERT, Assam not be republished

(घ) कथकली : ....

(ङ) ओडिसी : ....

(च) मणिपुरी : ....

(छ) मोहिनी आत्तम : ....

5. **आदर्श संगीत महाविद्यालय के वार्षिक समारोह में संगीत की निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ रखी गई हैं :**

भजन, खयाल, तबला वादन, सितार वादन, कथक नृत्य, बरगीत, सत्रीया नृत्य, आधुनिक गीत, ज्योति संगीत, विष्णुराभा संगीत, बिहु नृत्य।

(क) दीया ने बिहु नृत्य में भाग लिया है। तुम किस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते/चाहती हो और क्यों ? उसके बारे में पाँच पंक्तियाँ लिखो।

(ख) उपर्युक्त प्रतियोगिताएँ संगीत की निम्नलिखित श्रेणियों में से किस-किसके अंतर्गत आती हैं, जानकारी प्राप्त करो :

(अ) शास्त्रीय संगीत

(आ) लघु शास्त्रीय नृत्य

(इ) आधुनिक गीत

(ई) लोक संगीत

योग्यता-विस्तार :

1. गीतों के निम्नलिखित प्रकारों के बारे में जानकारी हासिल करो और उन पर एक-एक अनुच्छेद लिखकर शिक्षक-शिक्षिका को दिखाओ :

(क) बरगीत (ख) रवींद्र संगीत

(ग) ज्योति संगीत (घ) विष्णुराभा संगीत

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ :

श्रीगणेश करना, तय करना, गले लगाना, हाथ बँटाना, फूला न समाना, आँखों का तारा।

3. संगीत सबको पसंद है। तुम्हें संगीत का कौन-सा प्रकार ज्यादा पसंद है और क्यों ? - इस पर पाँच वाक्य लिखो।

Copyright SCERT, Assam not to be republished

भाषा-अध्ययन :

1. इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो –

(क) राम भात खाता है।

(ख) सीता भात खाती है।

(ग) हम भात खाते हैं।

(घ) लड़कियाँ भात खाती हैं।

पहले वाक्य में 'राम' कर्ता है और क्रिया का रूप हुआ है 'खाता है'। परंतु दूसरे वाक्य में कर्ता 'सीता' है और क्रिया का रूप हुआ है 'खाती है'। इसका कारण यह है कि राम पुल्लिंग शब्द है और सीता स्त्रीलिंग शब्द। हिंदी के वाक्य में कर्ता के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने पर क्रिया का रूप बदलता है। तीसरे वाक्य में कर्ता है 'हम' जो पुल्लिंग बहुवचन में है और चौथे वाक्य में कर्ता 'लड़कियाँ' स्त्रीलिंग बहुवचन में है। इन वाक्यों में क्रिया के रूप क्रमशः 'खाते हैं' और 'खाती हैं' हुए हैं। कर्ता के लिंग बदलने पर भी क्रिया का रूप बदल जाता है। अतः देखा गया कि *ऊपर के वाक्यों में क्रिया के रूप कर्ता के अनुसार हुए हैं।*

कुछ और वाक्य देखो –

राम ने भात खाया।

राम ने रोटी खाई।

सीता ने भात खाया।

सीता ने रोटी खाई।

पहले दो वाक्यों में कर्ता 'राम ने' है परंतु क्रिया के रूप अलग-अलग 'खाया' और 'खाई' हो गए हैं। इसी प्रकार अंतिम दो वाक्यों में कर्ता 'सीता ने' है पर क्रिया के रूप 'खाया' और 'खाई' हो गए हैं। इन वाक्यों में क्रिया के रूप कर्ता के अनुसार नहीं बल्कि कर्म के अनुसार बदले हैं। पहले और तीसरे वाक्यों में 'भात' कर्म है और वह पुल्लिंग है। इसलिए क्रिया का रूप 'खाया' हुआ। दूसरे और चौथे वाक्यों में 'रोटी' कर्म है जो स्त्रीलिंग है। इसलिए इन वाक्यों में क्रिया का रूप 'खाई' हुआ है। अर्थात *इन वाक्यों में क्रिया के रूप कर्म के अनुसार हुए हैं।*

इसे भी जान लो :

ऊपर के वाक्यों से तुम लोगों को मालूम हो चुका है कि कुछ वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति का प्रयोग होता है और कुछ वाक्यों में नहीं होता। *'ने' का प्रयोग केवल भूतकाल में और सकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ किया जाता है।*

Copyright- SCERT, Assam not be republished

2. क्रिया के जिस रूपांतर से यह जाना जाए कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान का विषय कर्ता है अथवा कर्म है या भाव है- उसे **वाच्य** कहते हैं।

उदारहण :

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
मैं आम खाता हूँ।	*मुझसे आम खाया जाता है।*
संजू रोटी खाता है।	*संजू से रोटी खायी जाती है।*

अब निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में लिखो :

(क) मैं गीत गाता हूँ।

(ख) राजू गेंद खेलता है।

(ग) रीमा चिट्ठी लिखती है।

(घ) माँ दोनों के लिए चाय लाई।

3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो:

(क) वर्षा हुई। (सामान्य भूत)

(ख) वर्षा हुई है। (आसन्न भूत)

(ग) वर्षा हुई थी। (पूर्ण भूत)

(घ) वर्षा हो रही थी। (तात्कालिक भूत)

(ङ) वहाँ पहले खूब वर्षा होती थी। (अपूर्ण भूत)

(च) वर्षा हुई होगी। (संदिग्ध भूत)

(छ) यदि वर्षा होती तो खेती नहीं सूखती। (हेतु-हेतुमद्‌भूत)

ऊपर के वाक्यों के क्रिया-रूपों से पता चलता है कि काम बीते हुए समय में हुआ था। जिस क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के सात भेद माने जाते हैं- जो उपर्युक्त वाक्यों में कोष्ठक में दिखाए गए हैं।

अब निम्नलिखित वाक्यों को भूतकाल में परिवर्तित करो :

(क) दोपहर का समय है।

(ख) नेहा, स्नेहा की सहेली है।

© Copyright-SCERT, Assam not to be republished

(ग) राजू गेंद खेलता है।

(घ) रेहना खत लिख रही है।

(ङ) हम कल दिल्ली जाएँगे।

4. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो :**

(क) यह तुमने बहुत अच्छा सवाल पूछी है ?

(ख) रोहन ने पुस्तक पढ़ा।

(ग) सीमा ने भात भाई।

(घ) अयन ने रोटी खाया।

(ङ) सेठानी ने राजा से सवाल की।

परियोजना :

1. अब तुमलोग मंडली बना लो। हमारे असम में प्रचलित कुछ गीत जैसे– ज्योति संगीत, विष्णुराभा संगीत, बरगीत और जिकिर आदि का संग्रह करो और गीत की एक पुस्तिका प्रस्तुत करो।

2. तुम्हारे अंचल में प्रचलित संगीतों की एक तालिका बनाओ और साथ ही कुछ कलाकारों के नाम लिखो।

आओ, पाठ में आए नये शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
धुन	सुर	पहचान	परिचय
मशहूर	विख्यात	फिर	पुनः
शुरुआत	आरंभ	दौरान	समय के भीतर
श्री गणेश होना	आरंभ होना	अलावा	सिवाय
रोशन	चमक, विख्यात	देन	अवदान

Copyright- SCERT, Assam
not be republished